पंचम अध्याय

मीरा कांत के नाटकों के स्त्री चरित्र

प्रस्तावना :

मीरा कांत आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रमुख महिला लेखिका है। उन्होंने हिंदी नाट्य विधा को अपने मौलिक नाटकों के सृजन से संपन्न बनाया है। नाटकों के माध्यम से नारी विमर्श को प्रस्तुत करनेवाली मीरा कांत एक मौलिक नाटककार है। उनके नाटकों में अभिव्यक्त स्त्री-विमर्श अन्य महिला लेखिकाओं से भिन्न और प्रौढ़ है। वह नारी विमर्श से नारी प्रश्नों को स्थायी रूप से सुलझाना चाहती है। उनके नाटकों में नारी विमर्श का शोर न होकर नारी प्रश्नों का मौन उत्तर है। वह नारी प्रश्नों को शांतता से स्थायी समाधान देना चाहती है। पुरुषों के प्रति न तिरस्कार है न नारी के प्रति लगाव बस नारी जीवन का सुलझना है। उनके स्त्री चरित्र भारतीय व्यवस्था के प्रति तिरस्कार तो करते है लेकिन अपने स्थायी समाधान की ओर अग्रेसर होते है। नारी चरित्रों को एक नये पद्धति से प्रस्तुत करते हुए नारी विमर्श का समाधान देने का सफल प्रयास है। उनके नाटकों की स्त्री चरित्र सृष्टी निम्नलिखित है।

Scanned by TapScanner

5.2 'नेपथ्य राग' नाटक के स्त्री चरित्र :

'नेपथ्य राग' यह नाटक पौराणिक कथा को आधुनिक परिवेश में स्त्री-जीवन की विभिषिका को प्रस्तुत करता है। समकालीन रचनाओं में सभ्य एवं समुन्नत समाज मे भी स्त्री

Scanned by TapScanner

दहलीज नहीं पार कर सकी है। हाथ में मशाल लेकर खड़ी जरुर है, मगर आवाज अब भी नेपथ्य में गुंजकर उसी में विलिन होती है। काल प्रवाह की तीव्र गति में कई परिवर्तन आये हैं, कई चट्टाने, सदीयाँ, शती उजड़ गयी है लेकिन स्त्री जीवन एक नेपथ्य में ही है। साहित्यद्वारा समाज में स्त्री को अंधेरे से बाहर लाने की कोशिशें जोरों से हो रही है फिर भी स्त्री किन कारणों से आगे नहीं बढ़ पाती है उन्हें ढूँढ निकालने का प्रयास नाटक में हुआ है। 'नेपथ्य राग' नाटक पुरुष सत्तात्मक समाज की मानसिकता का उद्‌घाटन करने के साथ-साथ नारी मानसिकता के दुर्बल पक्ष को भी उजागर कर देता है।

'नेपथ्य राग' आज के समाज और प्राचीन समाज की कथा को जोड़ते हुए स्त्री की आकांक्षाओं की एक विस्तार की कहानी कहता है 'नेपथ्य राग' मालव गण नायक चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के समय चौथी-पाँचवी शताब्दी की उज्जयिनी की ग्राम बाला खना की यह कहानी स्वर्णिम इतिहास में स्त्री के वैदुष्य के नकार की कहानी है। जिसमें खना की चुप्पी के माध्यम से कई प्रश्नों को जन्म देता है। युग-युगांतर से चले आ रहे लिंग-विभेद की कथा है। जिसमें आधुनिक तीन पिढ़ीयों के द्वारा वाणी दी गई है। 'नेपथ्य राग' नाटक में कुल मिलाकर चार स्त्री पात्रों का परिचय प्राप्त होता है। जिसमें खना पौराणिक पात्र है तो मेधा, माँ, दादी आधुनिक स्त्री पात्रों का योगदान रहा है। उनका चरित्र चित्रण निम्नलिखित है-

5.2.1 खना :

खना नाटक की प्रमुख नारी पात्र है। नाटक की पुरी कथावस्तु खना के इर्द-गिर्द घुमती है। खना की भूमिका नाटक में उद्देश की सजीवता को प्रस्तुत करती है। खना की कहानी नाटक का केंद्रबिंदु है। खना की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नवत रूप में प्रस्तुत है।

1) नाटक की प्रमुख पात्र :

खना नाटक की प्रमुख नारी पात्र है जो एक पौराणिक नारी रूप में सामने आती है। नाटक के प्रारंभ से लेकर अंत तक खना ही नाटक का केंद्रबिंदु रही है। खना के कारण ही नाटक की सजीवता प्रस्तुत होती है। खना की आयु लगभग 20 वर्ष की है। खना के व्यक्तित्व में आत्मविश्वास, तेजस्विता, विनम्रता और एक सुदर्शना अंगीभुत गुण है। खना को पितृछाया प्राप्त नहीं है। उसके लिए माँ ही माता-पिता है। खना स्वयंभू प्रतिभा की धनी युवती रही है।

Scanned by TapScanner

जिसकी आभा से उसका परिवेश हमेशा परिचित है। खना की यह प्रतिभा बचपन से ही सबको अपनी और आकर्षित करती रही है। खना अपने जीवन में एक बड़ी ज्योतिषी बनना चाहती है। जिसकी रुचि हमेशा उसी में रही है। ज्ञान-प्राप्ति की लालसा उसे बेचैन करती रहती है। एक समय की ग्रामबाला खना की ज्ञान अतृप्ति उसे साहित्य, कला के धाम उज्जयिनी ले आती है। जहाँ ज्ञान गंगोत्री बहती है। खना का सबसे बड़ा सपना ज्योतिषशास्त्रज्ञ विभुति वराहमिहिर की शिष्या बनने का रहा था। खना की यही ज्ञान अतृप्ति नाटक में शुरु से लेकर अंत तक दिखाई देती है। इसी ज्ञानी प्रतिभा के कारण उसे जीवन से निष्कासित यह पुरुषी मानसिकता करती है। जिसका प्रस्तुतीकरण नाटक में प्राप्त होता है।

2) सुबंधु भट्ट की भतीजी तथा मानस पुत्री :

खना एक युवती है। जिसके जीवन में पिता की छाया बचपन में ही लुप्त हो गयी थी। उसके लिए माँ ही माता-पिता थी। माँ के पश्चात खना अपने जीवन में चाचा सुबंधु भट्टजी को मानती है। उन्होंने अपनी पुत्रवत खना को संसार की सबसे विद्या ग्रहण करने के लिए आश्वस्त किया है। उसे वह अपने घर लेकर आते है। भाभी यानी खना के माँ को कठिनाई से समझा पाते है की खना को ज्ञानप्राप्ति के लिए उज्जयिनी भेज दे। उसके जीवन के प्रति चाचा की जिम्मेदारियाँ कुछ अधिक ही रही थी। स्वयंभु प्रतिभा की धनी खना ज्योषितविद्या में पारंगत है। उसकी इच्छा थी की वह ज्योतिषतज्ञ महान विभुति वराहमिहिर की शिष्या बने। इसलिए वह अपने बंधु काका के साथ साहित्य और कला की नगरी उज्जयिनी आयी थी। जिस उद्देश हेतु वह आई थी वह उद्देश पूर्ण होता है। वराहमिहिर खना को शिष्या के साथ-साथ पुत्रवधु के रूप में भी स्वीकार करते है। नियति के गति ने खना को राजभवन तक पहुँचा दिया था। उसकी प्रतिभा ने उसकी प्रतिभा को राजभवन तक की यात्रा करवाई थी। राजसभा का सदस्यत्व बननने का सौभाग्य खना को मिला था। जिसे जानकर खना अपने बंधु चाचा को इस वार्ता के प्रति आनंद के बारे में पुँछती है। तब सुबंधु भट्ट खना को बताते है-"... तुम नहीं जानती वह सब सुनकर मुझे कैसा लगा था। तुम मेरी पुत्री न सही पर मेरी मानस पुत्री तो हो।"[1] खना सुबंधु भट्ट के बड़े भाई-भाभी की बेटी है। जिसे वह स्वयं की मानस पुत्री मानते है।

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.53

Scanned by TapScanner

3) वराहमिहिर की शिष्या :

खना अपनी माता-पिता की एकलौती संतान थी। जिसे पिता के देहांत बाद उसके चाचा सुबंधु भट्ट अपने साथ उज्जयिनी लेकर आये थे। उसे वह ज्योतिष शास्त्र की उच्च शिक्षा देना चाहते है। जिसमें खना की अधिक रुचि थी। जबसे वह उज्जयिनी आती है तबसे वह अपने बंधु काका को दिन में दस बार आचार्य वराहमिहिर से मिलने का स्मरण कराती है। वराहमिहिर मालवगणनायक विक्रमादित्य के नवरत्नों में एक रत्न है। जो ज्योतिष विद्या में पारंगत विद्वान है, जो सुबंधु भट्ट को पुत्रवत स्नेह करते है। खना उन्हीं को गुरु बनाने की इच्छुक थी। वह उनकी शिष्या बनने की भावना को मन में बहुत दिनों से संजोए रखती हे। एक दिन वराहमिहिर सुबंधु भट्ट के घर पधारते है। उस समय वह वराहमिहिर के सामने अपनी प्रतिभा तथा इच्छा दोनों की अभिव्यक्ति करती है। वराहमिहिर छोटी सी आयु में इतनी बड़ी जीवन के प्रति मनिषा देखकर खना के प्रति प्रभावित होते है। एक स्त्री होने के नाते इस ज्योतिष विद्या को प्राप्त करने की प्रगाढ़ इच्छा खना में देखकर आचार्य वराहमिहिर उससे बहुत सारी चर्चा करते है। जिसमें खना की प्रतिभा को बिखरते वह पाते है। खना की जिज्ञासा, लगन वराहमिहिर को प्रभावित करती है। अंततः वह खना को शिष्या रुप में ग्रहण करने पर मजबूर होते है और उसके उभरते प्रतिभा के सामने वह अपना शिष्यत्व प्रदान करते हुए कहते है-"... मालवगणनायक चंद्रगुप्त विक्रमादित्य की राज्यसभा का यह नवरत्न वराहमिहिर आज इस बालिका खना को ज्योतिषशास्त्र में दीक्षित करने का वचन देता है।"[1] आचार्य खना के व्यक्तित्व के हर पहलू को जानकर उसे स्त्री होने के पश्चात भी अपनी शिष्या बताते है।

4) सौंदर्यवती युवती :

खना एक विदुषी कन्या थी। जिसके कारण वह कम समय में अपने ज्ञान के कारण महान विभुति आचार्य वराहमिहिर की शिष्या बनती है। वराहमिहिर को ज्योतिष ज्ञानप्राप्ति हेतु गुरु रूप में प्राप्त करने के कुछ ही दिनों में उनकी पुत्रवधु के रूप में प्रस्तुत होती है। वराहमिहिर की इकलौती संतान प्रथुयशस थी। जो ज्योतिषाचार्य था। जो आयु में 26 वर्ष का नवुयवक था। वह खना के प्रति आसक्त होता है। खना उसके पिता की शिष्या थी। प्रथुयशस खना के सौंदर्य तथा विदुषिता से आकर्षित होता है। वह उसे अपने घर में अध्ययनशाला में गणना करती

---

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.18

Scanned by TapScanner

अपनी कार्य में व्यस्त रहती थी तो उसे देखता रहता था। प्रथुयशस इन्हीं स्मृतियों की धरोहर के कारण उसे अपनी जीवनसंगिनी बनाने की हठ अपने पिताश्री वराहमिहिर के सामने रखता है। खना में एक अद्‌भूत सौंदर्य भी निवास करता था। जिस पर पृथुयशस आसक्त होता है। उसके सौंदर्य के संदर्भ में कहता है-"जबसे तुम्हें देखा है, एक अद्‌भुत खना के आकर्षण से घिरता चला गया हूँ...।"[1] प्रथुयशस खना से जब-जब मिलता है तब तब उसके सौंदर्य पर आसक्त होता रहा है। उसको केवल दर्शन प्राप्त करने के लिए वह सुबंधु भट्ट के यहाँ दो-तीन बार चला गया था। जब वह अपने कामों में व्यस्त रहती थी तब वह उसे दूर खड़ा होकर निहारता था। वह उसके सौंदर्य पर आकर्षित रहा था। इस आकर्षण ने उसे प्रेम करने को बाध्य किया और इस प्रेम ने उसे जीवनसंगिनी बनाया था-"आह ! ज्ञान से ढँका यह अक्षत सौंदर्य।"[2]

5) पृथुयशस की पत्नी :

खना से वराहमिहिर शिष्यत्व ग्रहण करने के कुछ दिन पश्चात ही वह उनकी पुत्रवधु बनती है। वराहमिहिर के सुपुत्र प्रथुयशस जो एक उदयमान ज्योतिषाचार्य थे। वह खना के वैदुष्य तथा सौंदर्य पर आसक्त होता है। वह अपने पिताश्री वराहमिहिर से चर्चा-विमर्श के पश्चात खना से ही विवाह की कामना को प्रखरता से रखता है। प्रथुयशस जानता था की खना से वराहमिहिर प्रभावित थे। उनके घर की पहली बार किसी शिष्या ने देहरी पार करके प्रवेश किया था। साथ ही खना एक विदुषी कन्या थी। जिस पर वराहमिहिर आक्षेप भी उठाते है क्योंकि वे जानते थे की खना की स्वयंभू प्रतिभा आनेवाले कल में उज्ज्वल भवितव्य की राह पर थी। उपर से प्रथुयशस और खना एक मार्ग के पथिक थे। जहाँ पर स्त्री विदुषी रुप में खना का उसी मार्ग पर आगे निकलना और उसे आगे जाते देखने का साहस प्रथुयशस न जुटा पाने का भय उन्हें था जिसका उत्तर देते हुए प्रथुयशस कहता है -"आपकी कृपा से अपने सामर्थ्य पर विश्वास है मुझे, यदि दोनों की रुचियाँ दोनों का मार्ग एक हो तो गृहस्थ में सजीवता बनी रहती है... गृहस्थ की नयी दिशाएँ खुलने लगती है।"[3] प्रथुयशस के तर्कशील प्रतिउत्तर ने वराहमिहिर को विवाह के लिए संमती देने के लिए विवश कर दिया था। जिसके परिणामस्वरूप खना मिहिर कुल की पुत्रवधु का सौभाग्य प्राप्त कर पाती है और प्रथुयशस भी खना को पत्नी रुप में पाने में सफल

---

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.53
2) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.31
3)) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.21

Scanned by TapScanner

रहता है-"तुम्हें जीवनसंगिनी के रुप में इस प्रकार देखकर एकाएक विश्वास नहीं होता।"[1] खना ने प्रथुयशस को पती रुप में प्राप्त कर वराहमिहिर के शिष्या से उनकी पुत्रवधु बन पाई थी।

6) प्रेम में संयोग वियोग पर विश्वास :

खना पृथुयशस की अर्धांगिनी बनती है। एक विदुषी शिष्या के साथ उसका अपने गुरु से श्वसुर का संबंध बन जाता है। वराहमिहिर विक्रमादित्य के राजसभा में एक नवरत्न थे। साथ ही सुविख्यात ज्योतिषाचार्य, विद्वान थे। उनके पुत्र भी उनकी ही परछायी थी। जो उदीयमान ज्योतिषाचार्य प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी थे। जिनको विक्रमादित्य ने नयी वेधशाला के लिए वास्तु के अनुरूप स्थान का चयन करने का कार्यभार सौंप दिया था। जिसके पहले ही पृथुयशस ने खना से विवाह करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया था और विवाह के बाद भी वह खना से दूर जाना उसे अच्छा नहीं लगा है। संयोग से वह आनेवाले वियोग की चिंता करता है। नवविवाहिता पत्नीरुपा खना को छोड़कर जाना उसे अच्छा नहीं लगता है। अपने पती की मनोदशा को जानकर तथा उसे उसके दुःख से उभारने के प्रयत्न करते हुए खना समझाती हुई कहती है-"संयोग तभी पूर्ण होता है जब वियोग भी हो। वियोग में संयोग की प्रतिध्वनि ही गूँजती है... अनुगुँज बनकर।"[2] खना जीवन में सुख-दुःख, संयोग-वियोग के महत्त्व को जानती है तथा प्रेम में इन सबका होने पर उसका विश्वास है। तभी तो जीवन की संपुर्णता का अहसास होता है। खना प्रेम में केवल संयोग नहीं चाहती है और वियोग में भी संयोग आवश्यक मानती है। मनुष्य जीवन इन दोनों से परिपूर्ण होता है।

7) असाधारण व्यक्तित्व की धनी :

खना एक असाधारण व्यक्तित्व वाली युवती है। जिसकी प्रभा से सभी परिचित है। वह सर्वसामान्य जीवन यापन करने का सपना नहीं देखती है बल्कि वह अपने आप में एक अलग संसार की निर्मिति करती है। जिसके लिए वह वराहमिहिर जैसे महान आचार्य का शिष्यत्व प्राप्त करने का सपना लेकर अपने काका सुबंधु के यहाँ उज्जयिनी आती है। वराहमिहिर सुबंधु भट्ट से पुत्रवत स्नेह रखते है। जिनके द्वारा वह उनका गुरुत्व प्राप्त करना चाहती है। पहली मुलाकात में वह आचार्य वराहमिहिर का मन जीत लेती है। उनसे वह अशिष में ज्ञानमार्गी होने का वरदान चाहती है। वह एक सामान्य परिवार से है उपर से एक स्त्री का है। खना एक निर्भिक युवती थी।

---

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.20
2) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.31

Scanned by TapScanner

वह आचार्य के प्रश्नों तथा मनिषायों का समाधान करती है। वह चारों तरफ फैले गगन मंडल ग्रह-नक्षत्रों व तारों का सत्व ग्रहण करना चाहती है। उनसे वह बातें करना चाहती है। सुर्य, चंद्रमा, धरती, ग्रह आदी से उनकी कृपा की खना अभिलाषी है। यह अभिलाषा किसी सामान्य मनुष्य वृत्ति की न होकर असामान्य व्यक्तित्व के संकेत थे। इस ज्ञान प्राप्ति के लिए वह पृथ्वी के गुरु के आचार्य वराहमिहिर की अनुकंपा चाहती है। जिसकी ज्ञानी, तेजस्विता एवं स्वयंभु प्रतिमा से प्रभावित होकर आचार्य वराहमिहिर उसे अपनी शिष्या बनाते है। खना जो एक ग्रामबाला थी वह पहली ऐसी आचार्य की शिष्या थी जिसने वराहमिहिर की देहरी में प्रवेश किया था। जिसे स्वयं के आँखों से देखकर सुबंधु भट्ट खना से कहते है-"उस पर तुम्हारा असाधारण व्यक्तित्व।"[1] सुबंधु भट्ट जो एक सांसारिक दुनिया के अनुभवी व्यक्ति रहे है उन्हें खना का असाधारण व्यक्तित्व समाज के लिए स्वीकार्य होगा की नहीं इस पर वे संदेह करते है क्योंकि समाज पुरुषी मानसिकता के प्रभाव से चलता रहा है। जिसे इस स्त्री प्रतिभा की आभा रास न आने की संभावना थी। क्योंकि यह संसार पुरुषों का संसार है। खना की इसी व्यक्तित्व ने विक्रमादित्य चंद्रगुप्त को भी प्रभावित किया था। स्वयं वराहमिहिर भी खना के प्रति विवाह के पश्चात भी उसके व्यक्तित्व से प्रभावित थे। विवाह के बाद भी स्वयं के अध्ययन में खना कम नहीं रही। ना ही गृह-गृहस्थी के जिम्मेदारियों से जिसे देखकर वराहमिहिर स्वयं कहते है-"देखता हूँ घरेलू दायित्वों और स्वाधाय का अच्छा संतुलन है यह खना।"[2] खना एक असाधारण व्यक्तित्व वाली युवती दिखाई देती है।

8) एक ज्योतिष्मती स्त्री :

खना एक असाधारण व्यक्तित्व की युवती थी। जिसने अपने जीवन में ग्रह, नक्षत्रों से बात करने का सपना देखा था। सुर्य से, चंद्र से, आकाश से, धरती से ग्रहों से, कृपा प्राप्त करके ज्ञान प्राप्ति वह चाहती थी। जिससे वह भय मुक्ति प्राप्त करे। इसी अभिलाषा ने उसे वराहमिहिर का गुरू रूप प्राप्त करवाकर दिया था। खना ने स्वाध्याय तथा गुरु के आशिष से अपना ज्ञान बढ़ाया था। ज्योतिष्यमती होना एक अपने-आप में असाधारण था। वो भी एक स्त्री के लिए, वह भी पुरुषीमयी संसार में यह स्थान प्राप्त करना कठीण कार्य था। जिससे स्वयं वराहमिहिर भी परिचित रहे थे। इसलिए अपने पुत्र पृथुयशस का विवाह खना से करने के लिए शंकित रहे थे।

---

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.24
2) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.37

Scanned by TapScanner

क्योंकि दोनों एक ही मार्ग के पथिक थे। जिसमें खना का आगे निकलकर जाना निर्धारित था। जिसे उनका पुत्र देख पाने का साहस न जुटा पाने की उन्हें चिंता थी। खना की प्रतिभा अर्जित कि गयी न होकर स्वयंभू थी। इसलिए उसके ललाट की रेखाएँ आचार्य ने पहले ही पढ़ ली थी। विवाह के बाद स्वयं विक्रमादित्य चंद्रगुप्त वेश बदलकर निर्धन पुरुष रूप में गौड प्रदेश में हो रही वर्षा के कारण मची त्रासदी पर ग्रहचाल की पुछताछ के लिए वराहमिहिर के घर जाते है। जहाँ पर उनकी पुत्रवधु खना विक्रमादित्य को तो पहचान नहीं पाती लेकिन उनके द्वारा पुछे गये प्रश्नों को सुनकर आनेवाले कल का भविष्य अनजाने रुप में सहजता से कहती है-"हेमंत ऋतु में निरंतर वर्षा ! अर्थात चातुर्मास के अतिरिक्त निरंतर वर्षा... अर्थात अन्य किसी ऋतु में निरंतर सात दिन से अधिक वर्षा... अर्थात... घोर... अपशकुन... विनाश... राजा की मृत्यु... रक्तपात... राजा की मृत्यु निःसंदेह की मृत्यु।"[1] विक्रमादित्य के परेशानी का भविष्यकाल जिसे वराहमिहिर न कह पाये उसे सहजता से खना ने कह दिया और वही घटना घटित रही। जिससे सभी प्रभावित भी रहे थे। खना एक ज्योतिषमयी रही है। जिसका इतिहास भी इस बात का साक्षी रहा है।

9) सूक्ष्म अंतर्दृष्टि वाली स्त्री :

खना एक प्रतिभाशाली तथा ज्योतिषमयी युवती है। वराहमिहिर की पुत्रवधु बनने के पश्चात उसकी ज्योतिषी ज्ञान प्राप्ति का परिचय अधिक गहराई में तथा परिणाम कारक रुप में सबके सामने आता है। जिसके स्वयं मालवागणनायक विक्रमादित्य चंद्रगुप्त साक्षी रहे थे। गौड प्रदेश की वर्षा के कारण उनकी त्रासदी के प्रति गृहचाल की दशा जानने के लिए वो राज्य के महान ज्योतिषाचार्य वराहमिहिर के पास आते है। जिसके प्रश्नों का समाधान वराहमिहिर के पूर्व ही सहजता से एवं सरलता से खना ने अपनी विदुषता के कारण किया था। जिसे देखकर वराहमिहिर ने कहा था-"बालिका है-पृथुयशस की पत्नी... ज्योतिष में रुचि है... खना नाम है... इस वय में उत्साह की अधिकता रहती है।"[2] स्वयं की प्रतिभा के सामने खना की उभरती प्रतिभा को देखकर उसे उत्साह की अधिकता कहते है। लेकिन उसकी भविष्यवाणी सच निकलती है। जिस पर विक्रमादित्य सोचते हुए अपनी महादेवि से वाद-संवाद में कहते है-"... खना की भविष्यवाणी न पूरी तरह सत्य सिद्ध हुई और न ही झूठ। उसने कहा था राजा की

---

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.40
2) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.42

Scanned by TapScanner

मृत्यु... राजा की मृत्यु तो हुई परंतु गौड प्रदेश के नरेश की मृत्यु! नहीं... यह भविष्यवाणी वय का अतिरिक्त उत्साह नहीं सुक्ष्म अन्तर्दृष्टि का परिणाम है।"[1] खना की भविष्यवाणी को वराहमिहिर ने अतिरिक्त उत्साह कहा था। लेकिन वो तो उसकी सुक्ष्म अंतर्दृष्टि का परिणाम था की जो भविष्य को यथावत बयान करती थी। जिसे स्वयं विक्रमादित्य ने अनुभुत किया था। जिसका परिचय सारे संसार को प्राप्त होता है। खना की भविष्यवाणी में एक सुक्ष्म अंतर्दृष्टि समाहित रही है। जो अन्य ज्योतिष आचार्य से उसे अलग रखती थी। खना का यह अलगपन राष्ट्रहित में सहयोग प्रदान करने की आशा से विक्रमादित्य कहते है-"मणिकार दुर्लभ मणियाँ भी नहीं पहचान पाएगा तो क्या करेगा ! भविष्य से संभवतः उज्जयिनी तुम्हारे ज्ञान और अंतर्दृष्टि से लाभ उठा सके।"[2]

10) नारी जीवन के प्रति सहिष्णुता :

खना स्वयं एक नारी है। नारी जीवन के प्रति असहिष्णुता रखने वाले समाज के प्रति वह एक चिंतनशील एवं चिरंतन विचार प्रस्तुत करती है। विदुषी प्रतिभा के कारण उसका परिचय सभी राज्य में फैल जाता है। जिसके फलस्वरूप उसे राजभवन जाने का सुयोग प्राप्त होता है। साथ ही विक्रमादित्य का दर्शन-लाभ तथा महादेवि से अनौपचारिक अंतरंग वार्ता करने अवसर प्राप्त होता है। जिसका स्वागत राजभवन में एक विदुषी के रूप में होता है-"आचार्य वराहमिहिर की विदुषी पुत्रवधु खना देवी का चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के राजभवन में स्वागत है।"[3] खना को विक्रमादित्य के द्वारा मिला सम्मान बहुत ही श्रेष्ठ लगा था। वहाँ जाने के बाद महादेवी से वार्तालाप करते समय नारी जीवन की समसामायिकता पद-प्रतिष्ठा पर समाज में परिवर्तित होने की संभावना-असंभावना पर चर्चा होती है। महाराजा भर्तृहारि ने बहुत ही कम आयु में संन्यास ग्रहण किया था। जिसका कारण उनकी पत्नी पिंगला रही थी। अमरत्व प्रदान करनेवाला एक फल राजा भर्तृहरि को एक ब्राह्मण ने दिया था। जिसे वो अपनी महारानी पिंगला को देते है। रानी पिंगला उस फल की विशेषता जब जान जाती है तो उसे वह स्वयं न खाकर अपने प्रेमी को जो एक सेनापती है उसे देती है। वह प्रेमी उस फल को अपनी प्रेमिका राज्य की एक गणिका को देता है। गणिका उस फल को स्वयं न खाकर वह राजा भर्तृहरि पर आसक्त होने के कारण महाराज को देती है। उस समय उन्हें पता चलता है की पिंगला किसी दूसरे से

---

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.42
2) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.44
3) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.42

Scanned by TapScanner

स्नेह करती है तब वह संसार से स्वयं को विरक्त कर लेते है। सारा संसार उनके लिए अर्थहीन बनता है। इसलिए वह संन्यास ग्रहण करते है। जिस पर खना का चिंतनशील, सहिष्णु मन व्यथीत होता है। वह सोचती है की अगर किसी स्त्री का पती ऐसा एकनिष्ठ नहीं रहता तो क्या राजा भर्तृहरी की तरह वह स्त्री भी संन्यास ले सकती है। जो कार्य पुरुष के लिए सहज है वही एक स्त्री के लिए भी उतना ही सहज एवं समाजमान्य होगा। जिसे महारानी के सामने अभिव्यक्त करते हुए खना कहती है -"क्या समाज उस स्त्री को इस आधार पर संन्यास लेने की अनुमति देगा? क्या यही समाज उसे गृहस्थ की देहरी पार करने देगा?"[1] खना का मंतव्य सारी नारी जाति के प्रति एक चिंतनशील रहा है। जो महादेवी को भी सोचने पर मजबूर करता है। राष्ट्र की महादेवी रही तो क्या अंततः वह थी तो एक स्त्री ही। नारी का समाज में पद उच्च हो या निच स्थिति में कोई अंतर वह नहीं प्राप्त करती है। जिस पर विदुषी खना की नजर तथा वक्तव्य को अंतरदृष्टि से प्रभावित करता है।

11) दुर्भाग्यशाली विदुषी पुत्रवधु :

खना एक प्रतिभाशाली स्त्री थी। ज्योतिषशास्त्र की वह अनुपम ज्ञाता थी। उसके भविष्यवाणी ने उसकी विद्वत्ता, ज्ञान, बौद्धिक क्षमता का परिचय पुरे संसार को करवाया था। ग्रामबाला खना की ज्ञान प्राप्ति की तृषा उसे साहित्य व कला के धाम उज्जयिनी ले आयी थी। उसकी विलक्षण बुद्धि एवं एकनिष्ठ जिज्ञासा के कारण उसे प्रख्यात ज्योतिषाचार्य वराहमिहिर का शिष्यत्व प्राप्त हुआ था। शीघ्र ही परिस्थितियाँ उसे वराहमिहिर की पुत्रवधु बना देती है क्योंकि उनका पुत्र पृथुयशस खना के ज्ञान से ढँके अक्षत सौंदर्य के प्रति आसक्त था। खना के गुरु आचार्य वराहमिहिर अब खना के श्वसुर बन जाते है। वराहमिहिर विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे। उनका राजसभा से संबंध खना की बढ़ती ज्ञान-कीर्ति को वहाँ तक ले जाता है। विक्रमादित्य ज्ञान के आलोक से दीप्त इस व्यक्तित्व की ओर बहुत तेजी से आकृष्ट होते है- "आचार्य वराहमिहिर की विदुषी पुत्रवधु खना देवी का चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के राजभवन में स्वागत है।"[2] महादेवी से मुलाकात होने के बाद खना अपना प्रभाव महादेवी पर भी छोड़ती है। विक्रमादित्य यही निर्णय राजसभा के सभी सदस्य नवरत्नों के सामने रखते है। खना को अपनी राजसभा में एक सभासद के रूप में अलंकृत करना चाहते है। यही पुरुषप्रधान समाज के

---

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.47
2) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.43

Scanned by TapScanner

प्रतिनिधि नवरत्न इस प्रयास को, निर्णय को अपने कुटिल चातुर्य से ध्वस्त कर देते है। इससे भी अधिक दुर्भाग्यपूर्ण बात यह होती है की स्वयं खना के गुरु और श्वसुर आचार्य वराहमिहिर तटस्थ रहकर इस षडयंत्र का एक सक्रिय कारक बनते है। कुछ नहीं कहते सभी के मत को स्वीकार कर उसे समर्थन देते है। विक्रमादित्य के सभी नवरत्न खना को सभासद रुप में प्रत्यक्षतः स्वीकार करके राजसभा में एक मूक सभासद के रूप में उसे स्वीकार करते है-"हमने निर्णय किया है कि वह युवा प्रतिभा विक्रमादित्य की राजसभा की शोभा बढ़ाए।"[1] साथ ही यह विचार तथा निर्णय वो राजसभा के सभी नवरत्नों के सामने रखते है-"आप सभी अवगत है कि कुछ दिन पूर्व आचार्य वराहमिहिर की शिष्या और पुत्रवधु खना देवी की गौड प्रदेश विषयक भविष्यवाणी एकदम सटीक बैठी ज्योतिषाचार्यों में उनकी एक निजी पहचान बन गयी है। मैं चाहता हूँ उनके ज्ञान और अन्तर्दृष्टि से पूरा राष्ट्र लाभ उठा सके और वह तभी संभव होगा जब हम खना देवी को राजसभा में सभासद के रूप में नियुक्त कर पाएँ।"[2] राजसभा में यह स्त्री के सभासद होने के बाद पहली बार प्रस्तुत हुई थी। जिसे सभी ने अपनी अपनी तर्क शुद्धता के सहारे परोक्ष रुपी असहमति ही देते है। जिसमें खना का दुर्भाग्य रहा की उसके गुरु रुपी श्वसुर आचार्य वराहमिहिर भी एक तटस्थता की भूमिका निभाते हुए उपस्थित रत्नों के मत को समर्थन देते है। अंततः विक्रमादित्य की सभा में जो निर्णय होता है उसे खना के सामने वो प्रस्तुत करते रहते है-"विक्रमादित्य के नवरत्नों को सभा में जिव्हाविहिन स्त्री सभासद चाहिए।"[3] इस पुरुषी संसार में विदुषी स्त्री सभासद रूप में राजभवन में रह सकती है लेकिन उसके पहले उसकी जीभ काट ली जाए। खना सर्वगुणसंपन्न तथा ज्योतिषज्ञानी होने के पश्चात भी अपना स्थान केवल स्त्री होने कारण पुरुषी संसार को अमान्य होता है। खना के बारे में डॉ.जयदेव लिखते है- "मीरा कांत के नारी विमर्श का केंद्रिय बिंदु यह है कि देश-काल चाहे कोई भी हो बुद्धिमती-विदुषी स्त्री को पुरुष समाज कभी सह नहीं पाता।"[4] विक्रमादित्य के राजसभा में उन्होंने आकाश मंडल के नवग्रहों की भाँति राष्ट्र के तेज को नवरत्नों के रुप में छाँटकर सभा में लाये थे। जो ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला के मर्मज्ञ गुणी जनों की उदार दृष्टि स्त्री को सभासदत्व प्रदान करने में असमर्थ रहता है केवल खना देवी एक स्त्री थी। जिसका बाद में कोई उल्लेख

---

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.48
2) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.55
3) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.57
4) लोकायतन, 16, 31 दिसम्बर 2017, राजकुमार का लेख, 'हाशिए का दर्द-ए-दास्तान', पृ.44

Scanned by TapScanner

प्राप्त नहीं होता है। उसके बारे में इतिहास ने महामौन धारण किया नजर आता है यही उसका दुर्भाग्य है।

12) लोकनिंदा की शिकार :

खना एक स्वयंभू प्रतिभा की धनी थी, जो ज्योतिषविद्या में अनूठा नगिना थी। जिसने अपनी विद्या में शास्त्र में गुरु वराहमिहिर को भी दो कदम पिछे छोड़ दिया था। ज्योतिषशास्त्र में खना की भविष्यवाणी ने संसार को प्रभावित कर दिया था। गौड प्रदेश के प्रति अनायास रूप में सहजता से खना की कही गयी भविष्यवाणी सत्य प्रतीत होती है। इतना ही नहीं खना ग्रह, नक्षत्र, तारों की सत्व को अपनाकर बुध की अभिव्यक्ति, बृहस्पति से विवेक, शुक्र से कलात्मक रचाव का सुख, शनि से उचित-अनुचित की पहचान वह ग्रह-नक्षत्रों को साक्षात देख पा रही थी। उनकी गति को वह जानने लगी थी। ज्योतिषविद्या के परंपरागत रीति से खना एक स्त्री होकर बहुत आगे निकल चुकी थी। जिसको सभी ने देख लिया था। खना की प्रतिभा जन्मजात थी। जिसको खना अथक प्रयासों से और गहराई से देख रही थी। यह एक नारी गौरवमयी बात थी। लेकिन उसके आभा को नारी ही विरोध कर रही थी। समक्ष विरोध न भी रहा तो वह परोक्ष रूप में उसे स्वीकृति नहीं दे पा रही थी। जिसे संसार ने भी ढकोसले के नीचे दबाना चाहा। जब स्वयं विक्रमादित्य नरेश चंद्रगुप्त खना के ज्ञान से प्रभावित होते है जिसका अनुभव वो अपनी अर्धांगिनी राष्ट्र की महादेवी से कहते है। जिस पर स्वयं नारी महादेवी भी उनके मंतव्य को जनश्रुती से जोड़ते हुए अपना भी मत जोड़ती है। और लोकनिंदात्मक खना के प्रति कटु वचन वह महाराज विक्रमादित्य को बताती हुई कहती है-"दासी कह रही थी कि आचार्य वराहमिहिर की पुत्रवधू खना ने अपने श्वसुर का बनाया हुआ कोई तैल पी लिया था...ज्योतिष्मति तैल।"[1] खना के उभरते ज्योतिष की प्रतिभा को सत्य से स्वीकार्य न करते उसे एक जनश्रुती ज्योतिष्मति तैल जो ज्ञान गंगोत्री की औषधि खाने का परिणाम मान लेते है। यानी की खना की बुद्धिमत्ता को ही अपनी सहमति प्रदान करते है। उनकी यह सहमति एक रूप में खना के विदुषी रूप का निषेध ही था। जो आज भी प्रासंगिक रहा है क्योंकि वैचारिक अभिव्यक्ति से रहित स्त्री ही समाज को आज भी स्वीकार्य रही है। यही सोच, दृष्टि पीढ़ी-दर-पीढ़ी पारंपारिक रूप से शताब्दीयों से ऐसे ही आगे प्रवाहित रही है। जिसे अभी तक नेपथ्य से मंच पर नहीं आने दिया

---

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.43

Scanned by TapScanner

है। हजारों वर्षों की स्त्री की यह दशा खना कहती है-"स्त्री सभासद... पिताश्री, आप तो व्यर्थ ही चिंतित है। श्रावण क्या यह तो आषाढ से भी पहले के मेघ है। बरसेंगे नहीं ! आषाढ़ अभी नहीं आया... नहीं आया... आषाढ आने में कई संवत्सर बीत जाएँगे... कई युग... यह नेपथ्य है... इसे मंच तक पहुँचने में समय लगेगा...कल्पान्त... कई युग... श्रावण क्या अभी तो आषाढ भी नहीं है...पूर्वाषाढ़ है... यह नेपथ्य है... नेपथ्य।"[1] खना के राजसभा सदस्यत्व केवल स्त्री होने के कारण नकारा गया था। स्त्री के विदुषिता को पहले अपने परिवार वालों से नकारा जाता है इसलिए वह संसार के सामने संघर्ष के पहले ही हार जाती है। समाज स्त्री के इस दृष्टिकोण को केवल नेपथ्य में रख पाया है। जो आज तक मंच पर नहीं आ पाया है। वराहमिहिर जैसे गुरु और अपने ही लोगों के कारण ही वह आज ही नेपथ्य में लुप्त है। जब तक यह अपने परिवारवालों, स्त्री के विदुषिता को सहर्ष स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक ऐसी कितनी विदुषी कन्याएँ समाज संरचना में बली चढ़ती रहेगी और यह तभी संभव होगा जब पुरुषी मानसिकता, दृष्टिकोण में परिवर्तन होगा। जब तक वराहमिहिर अपनी शिष्या तथा पुत्रवधु को पहले स्वयं सम्मान और उसकी योग्यता नहीं समझेंगे तब तक वह नेपथ्य में ही रहेगी। दुर्भाग्य का कलंक बनकर प्रतिभा को लोग एक ढकोसले को अपनाकर अस्वीकार करने लगते है। जिसमें खना का कोई अस्तित्व न होने का संकेत कर सारा श्रेय वराहमिहिर द्वारा बनाये ज्योतिष्मति तेल पर लगाया जाता है।

13) ज्ञानगंगा के प्रति अतृप्ति का भाव :

खना ने अपने जीवन में वराहमिहिर की शिष्या होने का सपना देखा था। जिसे वह पूर्ण करती है। खना के जीवन का दृश्य विधान द्रुतगति से बदलकर रहता है। जिसमें वह वराहमिहिर की शिष्या से वराहमिहिर की पुत्रवधु भी बन जाती है। सुबंधु भट्ट यानी खना के चाचा को वराहमिहिर द्वारा भेजे विवाह प्रस्ताव में खना के भविष्य के प्रति निश्चितता का भाव नजर आता है। जिसमें खना ससुराल न जाते ज्ञान की गंगोत्री में प्रवेश करेगी। स्वयं श्वसुर एक महान ज्योतिषाचार्य पति और स्वयं खना भी एक ही मार्ग के पथिक साथ ही मिहिर कुल में शिक्षित नारियों का अभाव नहीं था। स्त्री सम्मान यह परिवार संस्कारों से करता था। जहाँ पर खना की अभिरुचि, प्रतिभा मुरझानेवाली नहीं थी। उसकी प्रतिभा, आभा निखरनेवाली थी। लेकिन

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.62

Scanned by TapScanner

विवाह के पश्चात पृथुयशस की पत्नी एवं आचार्य वराहमिहिर की पुत्रवधु रूप में सुखी थी पर एक शिष्या रूप में उसके ज्ञान की तृप्ति नहीं हो पा रही थी। घर-परिवार के व्यक्ति तो वही थे लेकिन उनका कोण बदल चुका था। जिसकी अभिव्यक्ति करती हुई स्वयं खना अपने आत्मज पितासमान काका बंधु से कहती है-"... ज्योतिर्विद के परिवार में जा रही हूँ... लगा था निरंतर नवग्रहों के सान्निध्य में रहूँगी... नक्षत्रों से बातें करुँगी... पृथ्वी और आकाश का अंतराल नापूँगी परंतु...।"[1] परंतु ऐसा कुछ नहीं हो पाता है यहाँ तक की वह अपने श्वसुर गुरु से अधिक ज्ञान चर्चा भी तक नहीं कर पाती। जिसे उसे स्वयं को खो देने का भय लगता है। ज्ञान तृप्ति अधूरी रहने का डर लगता है।

14) अनूठी ज्योतिष्यमती बनने की अभिलाषी :

खना की हमेशा यह मंडल की दुनिया में विरचन करने की कामना रही है। वह धरती पर रहकर सारे सौरमंडल को अपने में बसाने की भावना रखती है। स्त्री होने के पश्चात भी वह एक असाधारण जीवन जीने की अभिलाषा मन में रखती है। साधारण ग्रामबाला होने के बावजूद भी वह संसार की जानी-मानी हस्ती, प्रतिमा, मुद्रा बनती है। जिसके लिए वह अपने गुरु वराहमिहिर का गुरुत्व भरा अशिष संग पाना चाहती है। यह मनिषा उसकी उनका शिष्य बनने में कार्यफलित होती है। वराहमिहिर की प्रथम भेंट में ही वह ज्योतिष दुनिया की गहराई के प्रति चर्चा प्रारंभ करती है। साथ ही निर्भिकता से जीवन की अपेक्षा बंधुकाका एंव वराहमिहिर के सामने प्रस्तुत करती कहती है-"पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक फैले गगन मंडल में कभी चमकते, कभी ठिठकते कभी विमुख होते ग्रह-नक्षत्रों व तारों का सत्व ग्रहण करना चाहती है। आह ! जीवन से अपेक्षा सुर्य से आत्मप्रकाश चाहती हूँ। चंद्रमा से मन का संसार चाहती हूँ। मन की उधेड़बुन को समझना चाहती हूँ। मंगल से उत्साह ऊर्जा चाहती हूँ। बुध से अभिव्यक्ति चाहती हूँ। बृहस्पति से विवेक चाहती हूँ। शुक्र से कलात्मक रचाव का सुख चाहती हूँ और शनि से उचित-अनुचित की पहचान की सुक्ष्म दृष्टि... उनकी गति जानने-समझने में मेरी गति हो। ऐसा ज्ञान चाहिए जो भय से मुक्ति दे।"[2] खना एक नारी होकर इस शास्त्र में ज्ञान प्राप्त कर ज्योतिषशास्त्र की ज्योतिष्यमती बनने की अभिलाषा रखती है। अंततः खना एक अनूठी

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.51
2) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.171

Scanned by TapScanner

ज्योतिष्यमति बनने की स्वयंभु प्रतिभा रखती हुई भी पुरुषी संसार से वह ध्येय प्राप्ति नहीं कर सकती है। इस विदुषिता को उभरने से पहले ही समाज उसे जिव्हाविहित बनाकर कुचलता है।

अंततः हम यह कह सकते है की खना एक प्रतिभाशाली, स्वयंभु, विदुषि युवती थी। जिसे केवल दृष्टिकोण के अंतर ने उभरने नहीं दिया। जो इतिहास के पन्नों तक ही सीमित रही। लेकिन उसका नेपथ्य आज मंच की माँग कर रहा है। आज खना जैसी अनेकों प्रतिभावान विदुषि युवतियाँ मंच पर प्रस्थापित होना चाहती है। जिसके लिए गुरु रुपी वराहमिहिर के सहयोग की आवश्यकता है। उनका ज्ञान तो समाजहित में उपयोगी है। लेकिन उसके सर्वव्यापकता की आवश्यकता है। जिसमें स्त्री उद्धार के कोण भी समाहित थे।

5.2.2 महादेवी :

महादेवी नाटक की प्रमुख दूसरी पौराणिक नारी पात्र है। जिसका परिचय नाटक में दृश्य आठ जो के कथानक में प्राप्त होता है। महादेवी का योगदान नाटक में कम मात्रा में प्रस्तुत होता है लेकिन बहुत महत्त्वपूर्ण है। महादेवी नाटक में केवल नारी पात्र नहीं है। वो मालवगणनायक चंद्रगुप्त विक्रमादित्य की अर्धांगिनी है। राजमहिषिनी तथा राष्ट्र की महादेवी है। जिनकी आयु 35 वर्ष के आस-पास की है। जो एक लावण्यवती है। साथ ही कुशाग्र बुद्धिवादी नारी है। जो अपने पती एवं राज्य के राजा के मन की बातों को जान लेती है। गौड प्रदेश की वर्षा ने मचाई तबाही रुक गयी थी। प्रजा के पुनर्वास का कार्य प्रगति पर था। सारे राज्य की स्थिति नियंत्रित होते हुए भी विक्रमादित्य के मन की स्थिति अस्थिर थी। जिसका कारण थी ग्रामीण बाला की स्मृतियाँ। जो खना के प्रति रही थी। जिस दिन कापित्यक ग्राम से महाराज वापस आये थे उस दिन से खना की अंतर्दृष्टि तथा की गई भविष्यवाणी के प्रति राजा प्रभावित तथा आकर्षित रहे थे। जिसका कारण जनश्रुति की कथा अंतर्गत महादेवी भी सोचती है-"... वराहमिहिर की पुत्रवधु खना ने अपने श्वसूर का बनाया हुआ कोई तैल पी लिया था... ज्योतिष्मति तैल।"[1] रानी का खना के प्रति समाजमान्य दृष्टिकोण रहा था। जिसे विक्रमादित्य ठुकराकर सत्य की विवेचना करते है। जिसमें ज्ञान की विशेषता पर लोगों की धारणा को असत्य बताते है। एक नारी विदुषिता का निषेध करना यह धारणा थी। जिसे विक्रमादित्य स्वीकार्य नहीं करते है। जिसे देख महादेवी उदार दृष्टि रखनेवाले अपने स्वामी के प्रति आदरभाव अधिक गहरा हो

Scanned by TapScanner

जाता है। महादेवी अपने पती के सामने उस महान विभुति ज्योतिषा खना से मिलने की बात कहती है। जिसे स्वीकारकर विक्रमादित्य खना को राजभवन में सम्मानपूर्वक अतिथि बनाकर बुलाते है। खनादेवी से मिलकर महादेवी प्रभावित होती है। दोनों में राजा भर्तृहरि तथा राणी पिंगला को लेकर वार्तालाप होता है। जिसमें नारी जीवन के प्रति पुरुषी संसार के दृष्टिकोण को लेकर चर्चा होती है। पुरुषों का दृष्टिकोण नारी के प्रति बदल जाए, वह अच्छा हो, वह बदलकर नारी प्रति अनुकूल बनने की भावना पर गहरा चिंतन दोनों में होता है। महादेवी भी खना से शुरु किए चिंतन में स्वयं राष्ट्र की राणी महादेवी होने के पश्चात भी स्त्री के प्रति समाज के नजर में वो केवल एक नारी ही है। जिसका स्थान उच्च हो या नीच जिसके प्रति व्यवहार में अंतर नहीं है। महादेवी जीवन में प्रेम, रिश्ते, नाते, संबंध में विश्वास को अत्यधिक महत्त्व देती है। राजा भर्तृहरि का विश्वास पिंगला के प्रति कितना गहरा था की जिसके टुटने पर उनका जीवन से ही नाता टूट गया था। जिसे वह स्वयं बताती है-"मानव स्वभाव ऐसा है कि जिस वेग से वह आकर्षित होता है, विश्वास टूट जाने पर उतना ही गति से वहाँ से हट भी सकता है।"[1] महादेवी जीवन में विश्वास को महत्ता प्रदान करती है। महादेवी खना देवी से प्रभावित रहती है। उसकी मेधावी प्रतिभा, अध्ययनशीलता, विचारशीलता से वो अत्यधिक आकर्षित होती है। यही वो सारे गुण विक्रमादित्य ने खना में देखकर उसे राजसभा सदस्य बनाने का निर्णय लिया था। सत्ता के केंद्र में पहली बार अपनी बौद्धिक प्रतिभा के बल पर एक युवती ने स्थान प्राप्त किया था। जिसके लिए महादेवी विक्रमादित्य के प्रति गहरा आदरभाव रखती है। इस निर्णय में विक्रमादित्य स्वयं से ज्यादा अपने नवरत्नों पर निर्भर करते है। जिसे देखकर महादेवी का मन अस्थिर होकर महाराजा के मन को उनके आंतरिक अस्थिरता को जानने का प्रयास करता है। जिसमें अंतिमतः एक पुरुषी संसार का अंश दिखाई देता है। जिसका राणी के मन में नारी होने के नाते भय होता है। वह अपने स्वगत कथन में उस वक्तव्य को कहती है-"... आपकी इस दुविधा का कारण आपका खना के प्रति छिपा हुआ आकर्षण तो नहीं।"[2] महादेवी जीवन की गहरी अनुभूति विक्रमादित्य के द्वारा प्रस्तुत करती है। पुरुषी मानसिकता इस संसार में पद, प्रतिष्ठा, सम्मान, कौन-सा भी हो लेकिन उनका स्त्री प्रति देखने का दृष्टिकोण एक-सा होता है।

---

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.45
2) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.49

Scanned by TapScanner

नारी देह रुपी चाहत राजा और रंक में एक जैसी ही होती है। महादेवी का यह मंतव्य पुरुषी समाजव्यवस्था तथा उसकी प्रवृत्ति पर करारा व्यंग्य करता है।

निष्कर्षतः महादेवी एक उच्च स्थान पर रहकर भी सामान्य नारी जीवन पर सोचती है। जिसका कारण पुरुषी संसार है और पुरुष पद से कितना भी उच्च हो या नीच आयु बड़ी हो या छोटी वह नारी को केवल देहरुपी ही देखता है। बाकी सारे दृष्टिकोण केवल नारी को छलने के ढकोसले होते है। महादेवी नारी पात्र आधुनिक युग की नारी जीवन के प्रति पुरुषों के उद्देश्य को समझती है जो त्रिकालाबाधीत सत्य है।

5.2.3 मेधा :

मेधा नाटक की आधुनिक नारी पात्र है। जिसकी आयु 26 वर्ष है। मेधा नामक पात्र का परिचय नाटक के प्रथम दृश्य में होता है। नाटक के अंतिम कथानक में भी मेधा का योगदान है। मेधा आधुनिक सुशिक्षित युवती है जो एक दफ्तर में अपने विभाग की प्रभारी नारी अधिकारिनी रही है। जिसका व्यक्तित्व मेधावी, बुद्धिवान, कर्मठ युवा नारी है। मेधा अपने जीवन में एक सफल युवती है। लेकिन अपने कार्यालयीन पुरुष कर्मियों के प्रति उदासीन है। उच्चभ्रू सुशिक्षित युवती होने के बावजूद भी उसे उसके कर्मचारी स्त्री होने के कारण उसके हर कार्य में आडंगा लगाते है। हर बार कोई ना कोई समस्या तैयार करते है। जिसका मेधा को मनस्वी दुःख होता है। मन में वह इस बात से एक घुटन तैयार करती रहती है। जिसके बारे में वह अपनी माँ से बात करती है-"ममा... ममा, मन में एक घुटन-सी होती है।"[1] जिसकी मनोव्यथा जानकर मेधा को उसकी माँ पौराणिक, ऐतिहासिक विदुषि युवती खना की कहानी सुनाती है। जिसमें सदियों से नारी को केवल देहरुपी स्वीकृति देती है। उसका वैदुष्य हमेशा उसके प्रतिमा को नष्ट करने के लिए प्रयोग में लाया है। विदुषीयता उसके अस्तित्व को उभारने के लिए नहीं, नष्ट करने के लिए समाज में पुरुषी मानसिकता उसे स्वीकार करती है। वह नारी को किसी भी युग में किसी भी स्थिति में अपने से उच्च या समानता का दायरा देने के लिए तैयार नहीं है। खना की करुण कहानी सुनकर मेधा माँ को खना के साथ स्वयं के दर्द को भी अभिव्यक्त करती है-"... हजारों साल पहले भी किसी को औरत होने की किमत चुकानी पड़ी थी। पर माँ वह युग क्या कभी आएगा... जब आषाढ और श्रावण के मेध बरसेंगे... जब नेपथ्य

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.12

Scanned by TapScanner

नेपथ्य नहीं रहेगा।"[1] खना की आधुनिक कड़ी शायद मेधा है। खना के जीवन की व्यथा शायद आज भी मेधा जैसी अनेकों युवतियाँ जी रही है। जो राग खना के जीवन में नेपथ्य तक ही रहा है। वह आज भी वही पर स्थित है। जिसे मंच की आवश्यकता है। वह मंच उसे कब मिलेगा। जिसकी राह शताब्दियों से खना जैसी युवती से लेकर मेधा जैसी युवतियाँ उसकी आवश्यकता को महसूस कर रही है। मेधा आज की आधुनिक सुशिक्षित पदसिद्ध, सम्मानित जीवन जीने वाली युवतियों का प्रतिक है। जो सबकुछ जानकर समझकर भी अपना संघर्ष नहीं जीत पा रही है।

5.2.4 माँ (मेधा की)

माँ रुपी पात्र नाटक में कथावस्तु के अंतर्गत दृश्य पहला में प्रस्तुत होनेवाला नारी पात्र है। जो मेधा की माँ है। जिसकी आयु 58 वर्ष की है। वह आधुनिक नारी माँ रुपी पात्र है। जो स्वयं एक सरकारी सेवा में उच्च पद पर आसीन है। जो भाव मेधा अपने जीवन में समाज की संरचना, पुरुषी मानसिकता के प्रति रखती है। वही भाव उसकी माँ भी रखती है। केवल अंतर है तो वह पिढ़ी का है। समाज की व्युहरचना तो वैसे ही है। जो भूतकाल में थी, वर्तमान में है, शायद भविष्य में भी ऐसे ही है। अपनी बेटी मेधा की व्यथा सुनकर उसे अपने नारी संघर्ष के प्रति प्रेरित करने के लिए वह उसे खना की कहानी सुनाती है। जिसके जीवन अनुभव मेधा से गहरे है-"क्योंकि अनुभव हमारे लिए समय से बाहर है... कालातीत अनुभवों में विश्वास करते है हम। तभी तो हमारे यहाँ मिथक और इतिहास के बीच की रेखा स्पष्ट नहीं हो पाती है..."[2] जिसे वह कहानी द्वारा उनका अंतर दूर करने का प्रयास करती है।

5.2.5 दादी :

दादी नाटक का सबसे कम योगदान देनेवाला आधुनिक पात्र है। दादी मेधा की दादी है। जिनकी आयु लगभग 75 वर्ष की रही है। जो नाटक के कथानक में पहले दृश्य में प्रस्तुत होती है तथा अंतिम दृश्य में भी अपना योगदान देती है। जो अपनी अनुभूतियों की गठडी को अपने युग में सहजी थी जिसके द्वारा मेधा के जीवन का मार्गदर्शन करना चाहती है। खना की कहानी से दादी भी परिचित थी जिसके जीवन के अंत को लेकर उन्होंने अपनी दादी से सुना था की उसकी जिव्हा उसके श्वसुर वराहमिहिर ने काटी थी। जिसे उन्होंने भी अपनी दादी से सुना था।

1) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.62
2) नेपथ्यराग -मीरा कांत, पृ.13

Scanned by TapScanner

दादी पात्र नाटक में नारी जीवन की पीढ़ियों-दर-पीढ़ियों, शताब्दियों से चलते आ रहे व्यथा की प्रौढ कड़ी का प्रतिक है।

Scanned by TapScanner